उपसंहार

उपसंहार

सआदत हसन मंटो बहुमुखी प्रतिभासंपन्न रचनाकार रहे हैं। उनकी रचनाओं को लेकर साहित्य जगत में अनेक चर्चाएँ उठीं और वह काफी देर तक विवादास्पद बने रहें। उनकी पूरी जिंदगी अभावग्रस्तता तथा संघर्षशीलता में बीती। हालाँकि बहुत कम जिंदगी उन्होंने जी। बचपन में प्यार के लिए वह तरसते रहें। शिक्षा की ओर उनका ध्यान न था इसलिए उसमें वे आगे नहीं बढ़ सके। लेकिन लेखनी उन्होंने नहीं छोडी, ताउम्र लेखन में उन्होंने खुद को डूबो दिया। अपने संघर्षशील जीवन में साहित्य निर्माण के साथ अनेक पत्रिकाओं का संपादन, फिल्म कंपनी में तथा ऑल इंडिया रेडियो में भी उन्होंने लेखन कार्य किया है।

मंटो का अंतरंग विविध आयामों से भरा हुआ है। अपनी निजी शैली, स्पष्टता, यथार्थता, मनोवैज्ञानिकता, बेचैनी, सेक्स की तरफ आकृष्टता, निडरता आदि विविध पहलूओं से उनका व्यक्तित्व साकार हुआ है। दिमागी अस्वस्थता की वजह से शराब पीने की आदत उन्हें थी जिसने उनकी जिंदगी को कम समय में ही खत्म कर दिया। इस कम उम्र में भी भरपूर जिंदगी वे जी गए जिस में लगातार लेखन करते हुए अमर साहित्य का निर्माण किया। उनके जीवन तथा रचनाओं पर फिल्म-निर्माण भी हो रहा है।

मंटो का रचनासंसार काफी विस्तृत है। विविध विषयों को लेकर विविध साहित्यिक विधाओं में उन्होंने लेखन किया है। अपने सिर्फ उन्नीस साल के रचनाकाल में उन्होंने कई कहानियाँ, नाटक, उपन्यास, निबंध रेखाचित्र, व्यक्तिचित्र, व्यंग्य, लेख, हास्य-एकांकी, रेडिओ-नाटक लिखे और कुछ अनुवाद भी किए। कई पत्रिकाओं से वे जुडे रहे तथा फिल्मों के लिए भी उन्होंने योगदान दिया। उनकी कई कहानियों पर अश्लीलता के आरोप लगे, उनमें से कुछपर मुकदमें भी चलें। अपनी तहरीरी बयानों में उन्होंने उन आरोपों का पर्दाफाश किया। इससे वह तंग आ चुके थे। उन कहानियों का गहराई से अध्ययन तथा सोच-विचार करने के बाद स्पष्ट होता है कि उनमें अश्लीलता नहीं है बल्कि जिनमें समाज की कडवी सच्चाइयों को उकेरकर सामने लाया गया है। अत: हिंदी-उर्दू साहित्य में मंटो ने अपने व्यक्तित्व तथा कृतित्व की अमीट छाप छोड़ी है।

मंटो ने जो जिया वही अपनी कहानियों में उतारा। छुपाने की आदत उन्हें नहीं थी, उनकी कहानियों में अनुभव की गहराई है, उनकी कहानियाँ आत्मनिवेदनपरक तथा निजी

शैली से युक्त है, इसीलिए उनमें यथार्थता तथा कटुता का समावेश दिखाई देता है। उनकी कहानियों में किस्सागोई तथा प्रभावात्मकता देखी जाती है। इन्सानियत तथा मानवियता के तमाम पहलुओं के इर्दगीर्द उनकी कहानियाँ घूमती दिखती हैं तथा उनको तलाशती रहती हैं।

मंटो की कहानियों में अनेक परिदृश्यों का चित्रण हुआ है। कई अनभिज्ञ बातों का प्रकाशन उन्होंने किया है। उनकी कहानियों में उन्होंने विविध विषयों, भावों तथा समस्याओं को उजागर किया है। कहानियों में विभाजन, प्रकृति, व्यवस्था, सामाजिक समस्याएँ, नारी, मनोवैज्ञानिकता, अंधविश्वास, धोखाधडी, मानवीयता आदि का चित्रण हुआ है। समाज, इंसान तथा जीवन के कई पहलुओं को अपनी कहानियों में उतारने में वे समर्थ बने हैं। उनकी कहानियों का गहरा प्रभाव इस कदर पाठक को घेर लेता है कि पाठक काफी देर तक उस प्रभाव के असर की गहराईयों में खोया रहता है तथा उसपर सोच-विचार करनेपर मजबूर होता है। कहानी के आखिर में आकर वह एक 'धचका' महसूस करता है। मंटो की कहानियाँ उनके अंतरंग को, विचारों को, अनुभूति को तथा तडप को उपस्थित करती हैं। उनकी कहानियों का सामान्य परिचय कर लेने के बाद यह बात जाहीर होती है।

समाज का चित्रण करते हुए मंटो ने अनेक सामाजिक समस्याओं को उपस्थित किया है। मंटो ने समाज में छुपी यथार्थ सच्चाईयों को तथा समस्याओं को उजागर किया। ये बहुत कड़वी थी इसलिए उस समय का समाज इसे गले न उतार सका और उन्हें अश्लील करार दिया गया। मंटो के महत् उद्देश्य से भिन्न नजरिए से उन्हें देखा गया। लेकिन इन कहानियों के गहराईयों तक जानेपर तथा उनमें प्रकट की समस्याओं के गांभीर्य को देखते हुए उन्हें कतई अश्लील नहीं कहा जा सकता। अपनी पूरी शक्ति के साथ समाज के दर्द, पीडा, दुख और तकलीफ के सही मुकाम पर उन्होंने ऊँगली रखी है। अपने चारों ओर फैले झूठ, फरेब और भ्रष्टाचार पर से पर्दा उठाया है तथा समाज के उस हिस्से को पेश किया है, जिसे समाज द्वारा नजरअंदाज किया जाता है। वे कोरे सुधारक नहीं हैं वरन् अत्यंत भाव-प्रवण एवं संवेदनशील व्यक्ति हैं, इसलिए समाज के निचले वर्गों के लोगों के साथ गंदगी में बसे रंडियों, भड़वों, दलालों, शराबियों आदियों में छुपी मानवीयता तलाशते हैं तथा उनकी समस्याओं को उद्घाटित करते हैं।

मंटो ने विभाजन, उसके परिणाम तथा उसके कारण बनी लोगों की मानसिकता की समस्या का चित्रण अपनी कहानियों में मुख्य रूप से किया है। इस माहौल ने उनके दिलों-

दिमाग पर गहरा असर डाला था। इन कहानियों में विभाजन के दौरान हुए दंगों की दहशतयुक्त हालात, स्थितियाँ, इस असर में बनी लोगों की मानसिकता का यथार्थ चित्रण उन्होंने किया है तथा कई पात्रों में मानवीयता की नींव भी डाली है। इस दृष्टि से 'टोबा टेकसिंह', 'टिटवाल का कुत्ता', 'यजीद', 'नंगी आवाजें', 'ठंडा गोश्त', 'खोल दो', 'गुरमुखसिंह की वसीयत', 'सहाय', 'रामखेलावन', 'शरीफन', 'सियाह हाशिये' आदि कहानियों में उन्होंने चित्रण किया है।

फितरत के खिलाफ जो कुछ होता है वह मंटो को मंजूर नहीं है। इंसान की फितरत के खिलाफ जाने की समस्या को मंटो ने अपनी कहानी में उतारा है। 'स्वराज्य के लिए' में गांधीवाद का विरोध तथा गुलाम अली एवं निगार द्वारा बच्चे न पैदा करने के वचन में बँधने से स्वभावगत, प्रकृतिगत कामवृत्ती को रोकने से हुई अवस्था तथा उनकी समस्या को रेखांकित किया गया है।

मजहब की दीवार दो सच्चे प्यार करनेवालों के बीच किस तरह से खड़ी होती है, इस समस्या का चित्रण मंटो ने 'दो कौमें' इस कहानी में किया है।

व्यवस्था कई बार इंसानियत की राह में रूकावट बनकर खड़ी होती है। फिर समाज में उसके प्रति विद्रोह की भावना पैदा होती है। व्यवस्था के प्रति विद्रोह की इस समस्या को मंटो ने 'सड़क के किनारे', 'नारा', 'मम्मी', 'दो गड्ढे', 'शहीदसाज' आदि कहानियों में प्रतिबिंबित किया है।

वेश्या-जीवन से संबंधित बहुत-सी कहानियाँ मंटो ने लिखी हैं। वेश्या-जीवन का नजदीक से अनुभव करने के कारण उसकी समस्याओं को यथार्थता, संवेदनशीलता तथा मनोवैज्ञानिकता द्वारा गहराई से चित्रित किया है। 'हतक' की सुगंधी, 'खुशिया' का खुशिया, 'काली सलवार' की सुल्ताना, 'डरपोक' का जावेद, 'सौ कैण्डल पावर का बल्ब' की औरत, 'हारता चला गया' की गंगूबाई, 'बाबू गोपीनाथ' का बाबू गोपीनाथ, 'मम्मी' की मम्मी इन पात्रों तथा उनसे संबंधित माहौल की समस्या को मंटो ने उघाड़ा है।

मजबूरी की समस्या अपनी व्यापक परिधि लिए हुए आज भी समाज में उपस्थित है। इस समस्या को मंटो ने अपनी कहानियों में चित्रित किया है। 'नारा' का केशवलाल, 'महमूदा' की महमूदा, 'जानकी' की जानकी आदि पात्र मजबूरी की समस्या से ग्रस्त हैं, जिनका मंटो ने चित्रण किया है।

ज्यादातर अमीर लोगों में ऐय्याशी की समस्या पाई जाती है जो उनको डूबो देती है। 'दूदा पहलवान' के सलाहो इस पात्र में ऐय्याशी की समस्या का चित्रण मंटो ने किया है।

मंटो ने बहुत सी यौन-विषयक कहानियाँ लिखी हैं। सेक्स से उनकी अभिरूचि थी इसलिए सेक्स के सूक्ष्म भावों तथा पहलूओं को पकड़कर उन्हें प्रस्तुत किया है। यौन भावना से ग्रस्तता की समस्या को उन्होंने अपनी कहानियों में उतारा है। 'स्वराज्य के लिए', 'मेरा नाम राधा है', 'ब्लाऊज', 'ऊपर, नीचे और दरमियान', 'धुआँ', 'ढ़ाँढ़स', 'बू', 'चुगद', 'मंत्र', 'खाली बोतलें, खाली डिब्बे', 'नंगी आवाजें', 'ठंडा गोश्त' आदि कहानियों में मंटो ने इस समस्या का चित्रण किया है।

प्रेम के संबंध में लोगों की अलग-अलग अपनी राय होती है। कई लोग इसमें बेवकूफ बनते हैं। तो वे अपनी राय बना लेते हैं। प्यार के संबंध में बनी इस मानसिकता की समस्या को मंटो ने 'चुगद' इस कहानी में चित्रित किया है।

अंधविश्वास तथा धोखाधड़ी की समस्या आज भी अपना तीव्र रूप धारण किए हुए है। 'मंत्र' कहानी में चौधरी मौजू का परिवार धार्मिक अंधविश्वास के कारण मौलवी की धोखाधड़ी का शिकार हो जाता है। 'मुसटेन वाला' में बिते हुए कल की संदर्भों का वर्तमानकालीन संदर्भों से संबंध जोडने की अंधविश्वास की समस्या को उजागर किया है। 'शाहदोले का चूहा' में संतानप्राप्ति के लिए सलीमा द्वारा शाहदोले साहब के मजार पर मन्नत करने की अंधविश्वास की समस्या तथा उसके परिणाम आदि को दिखाया गया है। इन कहानियों में मंटो ने अंधविश्वास तथा धोखाधड़ी की समस्या का सफल चित्रण प्रस्तुत किया है।

पति-पत्नी के बीच बाहरी संबंधों के कारण बनी अविश्वास की समस्या समाज में फैली हुई है। इससे पति-पत्नी के बीच दरार पड़ जाती है, वैमनस्य बढ़ता जाता है और अविश्वास के कारण संबंध टूटते हैं। इसी समस्या को मंटो ने 'टूटू' कहानीद्वारा बताया है।

बड़ों के गलत तरीकों से या उनकी बेपर्वाही से छोटे बच्चों पर होते हुए असर की समस्या को मंटो ने 'मंतर' कहानीद्वारा व्यक्त किया है।

जीवन में किस तरह मिलावट ही मिलावट बिखरी हुई है इसका चित्रण मंटो ने किया है। अत: हद को पार करती हुई मिलावट की समस्या को 'मिलावट' कहानीद्वारा सामने लाया है।

अपनी इज्जत हर किसी को प्यारी होती है और इसके लिए लोग अपनी हदों को पार करते हैं, इसके चक्कर में फँसकर इज्जत के साथ खुद को भी खो देते हैं। इज्जत के लिए बनी लोगों की मानसिकता की समस्या को 'इज्जत के लिए' के चुनीलाल पात्र की मानसिकता द्‌वारा बताया है।

थोड़ी सी कामयाबी मिलनेपर खुद को तरक्कीपसंद कहलानेवाले लोग समाज में पाए जाते हैं। 'तरक्की पसंद' में जोगिंदरसिंह द्‌वारा खुद को तरक्कीपसंद कहलानेवालों की समस्या और इसके कारण निर्मित हालत को चित्रित किया है।

समाज में कई लोग भ्रष्ट मानसिकता से ग्रस्त होते हैं। घिनौनी मानसिक विकृती की समस्या को मंटो ने अपनी कहानीद्‌वारा पेश किया है। 'शहीदसाज' में एक निजाम की भ्रष्टता को दिखाया गया है। काठियावाड गुजरात का एक मुसलमान बनिया धन तो बहुत कमाता है, पर दिल पर महसूस होते बोझ को हटाने के लिए लोगों को शहीद बनाने का नेक काम वह करता है। नेकी करने की तलाश में उसकी राय में यही नेक काम उसे पसंद आता है। ऐसे पात्रों द्‌वारा घिनौनी मानसिक विकृति की समस्या को मंटो ने उजागर किया है।

ममता नारी का प्रकृतिगत, स्वभावगत गुण है जो अनमोल है। नारी के लिए अपनी ममता उसे बहुत प्यारी होती है। अपने संतान की ममता में वह क्या कुछ नहीं करती, अपने आप को भुला देती है। लेकिन इसी ममता पर जब आघात होते हैं तो वह टूटकर बिखर जाती है, उसके लिए तरसती रहती है, व्याकुल हो उठती है। ममता पर होते आघात की समस्या को मंटो ने 'शाहदोले का चूहा', 'टूटू', 'खुदा की कसम' आदि कहानियों में चित्रित किया है।

समाज में कई लोगों के अमानुष कृत्य में इंसानियत के खत्म होने का नजारा दिखाई देता है। इंसानियत के अंत की घृणास्पद समस्या को मंटो ने 'गुरमुखसिंह की वसीयत' कहानी में गुरमुखसिंह के बेटे सरदार संतोखसिंह के कृत्यद्‌वारा चित्रित किया है।

समाज को खोखला बना देनेवाली उपर्युक्त समस्याओं का चित्रण मंटो ने अपनी कहानियों में पूरी यथार्थता से, आजादी से एवं ईमानदारी से किया है तथा समाज के सम्मुख रखा है। मंटो ने जिन समस्याओं का उद्‌घाटन किया है वो आज भी प्रासंगिक हैं।

नारी समस्याओं का चित्रण मंटो ने बड़ी ही सूक्ष्मता से, यथार्थता से एवं

मनोवैज्ञानिकता से किया है। उनकी कहानियों में नारी पात्रों की संख्या अधिक है अत: उनका चित्रण कर उनकी समस्याओं को भी मंटो ने अंकित किया है।

मजबूरी नारी की वह समस्या है जो उसको अंदर और बाहर से खोखला बनाती है। 'स्वराज्य के लिए' की निगार, 'सड़क के किनारे' की औरत तथा 'जानकी' की जानकी इन नारी पात्रों में मजबूरी की समस्या को मंटो ने रेखांकित किया है।

प्यार की सही पहचान से कई नारियाँ अनजान होती हैं वह सिर्फ जिस्मानी संबंधों को ही प्यार समझती हैं। इस समस्या को 'एक खत' की वजीर द्वारा मंटो ने बताया है।

प्यार के बीच खड़ी मजहब की दीवार की समस्या को मंटो ने 'दो कौमें' कहानी में दिखाया है। शारदा हिंदू है और जिसे वह प्यार करती है वह मुख्तार मुसलमान है। यहाँ मजहब की दीवार प्यार के बीच में खड़ी होती है जिससे प्यार टूटता है।

नारी की व्यवस्था के शोषण से ग्रस्तता की मुख्य समस्या को मंटो ने प्रतिबिंबित किया है। नारी अक्सर व्यवस्था के शोषण का शिकार होती रहती है। इस समस्या को मंटो ने 'सड़क के किनारे', 'महमूदा', 'मम्मी', 'जानकी', 'इज्जत के लिए', 'नंगी आवाजें' इन कहानियों में चित्रित किया है।

समाज के गंदगी में बसे रखैल तथा वेश्या-नारी पात्रों की समस्याओं को मंटो ने अपनी कहानियों में प्रमुखता से उतारा है। 'हतक' की सुगंधी, 'खुशिया' की कांता, 'सौ कैण्डल पावर का बल्ब' की औरत, 'हारता चला गया' की गंगूबाई, 'दूदा पहलवान' की इकबाल और अल्मास, 'मम्मी' की मम्मी, 'ठंडा गोश्त' की कुलवंत कौर, 'डरपोक' की वेश्या औरतें, 'काली सलवार' की सुल्ताना, 'बाबू गोपीनाथ' की जीनत इन पात्रों की तथा इनके पेशे से संबंधित समस्याओं को मंटो ने उतारा है।

कुछ ऐसी भी औरतें होती हैं जो सहारा, वासना आदि के लिए किसी शिकार की तलाश में रहती हैं और उसे फसाने में आचरज की हद तक बर्ताव करती हैं। 'शिकारी औरतें' इस कहानी में मंटो ने ऐसी ही शिकार के खोज में लगी नारी की मानसिकता की समस्या को उजागर किया है।

यौन भावना से ग्रस्त नारी की समस्या को मंटो ने अपनी कहानियों में उतारा है। 'मेरा नाम राधा है' की नीलम, 'धुआँ' की कुलसुम तथा 'ऊपर, नीचे और दरमियान' की बेगम ये नारी पात्र यौन-भावनाओं से ग्रस्त हैं।

विधवा नारी की समस्या पर भी मंटो ने प्रकाश डाला है। 'ढ़ाढ़स' कहानी की शारदा में इस समस्या का चित्रण मंटो ने किया है।

धार्मिक अंधविश्वास तथा संतान आदि के प्राप्ति की कामना में ज्यादा तर नारीयाँ इस अंधविश्वास एवं धोखे की शिकार हो जाती हैं। 'शाहदोले का चूहा' की सलीमा, 'मंत्र' की कांता और जीनाँ ये नारियाँ अंधविश्वास तथा धोखे की शिकार हो जाती हैं।

उच्च वर्गीयों के माहौल में रिश्तों का खोखलापन, अकेलापन, बेबसी, घुटन आदि के कारण बनती हुई नारी की मानसिकता का चित्रण मंटो ने किया है। 'फुँदने' में प्रतिकात्मकता द्वारा माहौल के कारण मानसिक विकृती से ग्रस्त नारी की समस्या को मंटो ने चित्रित किया है।

ममता की प्यासी नारी की समस्या को मंटो ने 'शाहदोले का चूहा' की सलीमा, 'टूटू' की ताहिरा, 'सुरमा' की फहमीदा, 'खुदा की कसम' की बुढ़िया आदि पात्रों में दिखाया है।

कोई चाहत अगर इंसान के मन मस्तिष्क में छा जाए तो वह उसके अधिन हो जाता है, उसके लिए वह तरसता रहता है, उसे पाए बगैर उसे चैन नहीं आता। 'सुरमा' कहानी की फहमीदा भी सुरमे की चाहत के अधिन है। मंटो ने फहमीदा का मनोवैज्ञानिकता से चित्रण किया है। अत: चाहत के अधिन हुई नारी फहमीदा की समस्या को मंटो ने चित्रित किया है।

नारियों पर होते अत्याचारों की श्रृंखला जमाने से चली आ रही है, वर्तमान में भी यह जारी है। नारी की अत्याचार की शिकार की समस्या को मंटो ने 'खोल दो', 'ठंडा गोश्त', 'शरीफन' आदि कहानियों में चित्रित किया है।

समाज में कई नारियाँ अपनी मनमानी आदतों की हिमायती होती हैं। वे अपनी स्वच्छंदता से तथा अपनी तौर-तरीकों से पेश आती हैं। किन्हीं भी स्थितियों में उनमें बदलाव नहीं होता। ऐसेही मनमानी आदतों की हिमायती नारी की समस्या को मंटो ने 'मोजेल' कहानी के मोजेल में दिखाया है।

नारी की दयनीयता तथा बेबसी की समस्या को मंटो ने 'गुरमुखसिंह की वसीयत' की सुगरा के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

नारियाँ अक्सर ज्यादा मात्रा में अफवाहों का जल्द ही शिकार हो जाती हैं। इन अफवाहों के कारण वो घबराहट में घिर जाती हैं। अफवाहों के कारण घबराहट से त्रस्त नारी की समस्या को मंटो ने उजागर किया है। 'यजीद' की जीनाँ अफवाहों के कारण घबराहट से त्रस्त हो जाती है।

हिंदी साहित्य के कहानी साहित्य में मंटो ने अपनी विशेषताओं से एक अलग स्थान बनाया है। उनकी कहानियाँ अनेक विशेषताओं से परिपूर्ण हैं। अपनी शैली में उन्होंने कहानियाँ लिखीं। विविधता, मनोवैज्ञानिकता, संवेदनशीलता, किस्सागोई, व्यक्तिवादिता, यथार्थता, नाटकीयता, जुलमेबाजी आदि विशेषताएँ उनकी कहानियों में दिखती हैं। आत्मनिवेदनात्मक शैली उनकी खास विशेषता है। पात्रों के चरित्र-चित्रण में भी वे काफी सफल हुए हैं।

मंटो की कहानियों में मनोवैज्ञानिकता का चित्रण काफी मात्रा में हुआ है। उन्होंने ज्यादातर पात्रों के तथा स्थितियों के मनोविज्ञान को उजागर किया है । 'सुरमा', 'फुँदने', 'मुसटेन वाला', 'किर्चें और किर्चियाँ', 'नारा', 'खुशिया', 'एक खत', 'नया कानून', 'हतक' आदि कहानियों में इस विशेषता का चित्रण मंटो ने किया है। साथ ही बाल-मनोविज्ञान के अंतर्गत 'मंतर', 'तमाशा' इन कहानियों का चित्रण किया है। यौन-मनोवैज्ञानिकता उनकी ज्यादातर कहानियों में दिखाई देती है। 'एक खत', 'स्वराज्य के लिए', 'मेरा नाम राधा है', 'ब्लाऊज', 'ऊपर, नीचे और दरमियान', 'धुआँ', 'बू', 'खाली बोतलें, खाली डिब्बे', 'चुगद', 'मंत्र', 'नंगी आवाजें', 'ठंडा गोश्त' आदि कहानियों में यौन-मनोविज्ञान का दर्शन होता है।

बँटवारे के आघात का गहरा प्रभाव मंटो पर हुआ था। इसलिए बँटवारे के समय के माहौल का यथार्थ चित्रण उनकी ज्यादातर कहानियों में मिलता है, अत: यह उनके कहानियों की एक बड़ी विशेषता है। उन्होंने इस विशेषता को 'टोबा टेकसिंह', 'सहाय', 'खोल दो', 'खुदा की कसम', 'मोजेल', 'गुरमुखसिंह की वसीयत', 'रामखेलावन', 'नंगी आवाजें', 'यजीद', 'टिटवाल का कुत्ता', 'शरीफन', 'सिहाय हाशिये', 'ठंडा गोश्त' आदि कहानियों में चित्रित किया है।

नारी पात्रों का सशक्त चित्रण करने में मंटो सफल हुए हैं, यह उनके कहानियों की प्रमुख विशेषता है। विभिन्न वर्गों तथा स्तरों के नारी पात्रों को मंटो ने अपनी कहानियों में

उतारा है। वेश्या-नारी जैसे समाज से अछूते पात्रों को उन्होंने चित्रित किया है। 'सडक के किनारे' की औरत, 'हतक' की सुगंधी, 'काली सलवार' की सुल्ताना, 'सौ कैण्डल पावर का बल्ब' की औरत, 'हारता चला गया' की गंगूबाई, 'मॅडम डीकॉस्टा' की मॅडम डीकॉस्टा, 'महमूदा' की महमूदा, 'शिकारी औरतें' की औरतें, 'मेरा नाम राधा है' की नीलम, 'मम्मी' की मम्मी, 'जानकी' की जानकी, 'सुरमा' की फहमीदा आदि नारी पात्रों का मंटो ने चित्रण किया है। कई कहानियों के नाम भी पात्रों के आधारपर दिए हुए हैं।

मंटो ने गलत व्यवस्था का विरोध करते हुए, उसके प्रति आक्रोश को व्यक्त किया है तथा उसपर व्यंग्य कसा है। 'नारा', 'हतक', 'सडक के किनारे', 'हारता चला गया', 'महमूदा', 'मम्मी', 'दो गड्ढे', 'शहीदसाज' आदि कहानियों में मंटो ने व्यवस्था पर कटारा व्यंग्य कसा है।

शोषण का चित्रण मंटो ने अपनी कहानियों में किया है। 'सौ कैण्डल पावर का बल्ब' में मर्द (दलाल) दूवारा वेश्या औरत का शोषण, 'मंत्र' में मौलवी दूवारा चौधरी तथा उसकी बीवी और बेटी का शोषण, 'हतक' में सेठ तथा माधो दूवारा सुगंधी इस वेश्या का शोषण आदि का चित्रण मंटो ने किया है।

मंटो व्यक्तिचित्रों के बादशाह हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में कई व्यक्तिचित्रों को खींचा है तथा उनमें मानवीयता का भी दर्शन कराया है। 'मैडम डीकॉस्टा' की मैडम डीकॉस्टा, 'दूदा पहलवान' का दूदा पहलवान, 'बाबू गोपीनाथ' का बाबू गोपीनाथ, 'मम्मी' की मम्मी, 'मम्मदभाई' का मम्मदभाई, 'जानकी' की जानकी, 'टोबा टेकसिंह' का बिशनसिंह, 'मोजेल' की मोजेल, 'रामखेलावन' का रामखेलावन, 'हतक' की सुगंधी आदियों के व्यक्तिचित्रों को मंटो ने खींचा है। तथा उनमें मानवीयता का दर्शन कराया है। कहानियों के नाम भी जिन व्यक्तिचित्रों को उन्होंने खींचा है उन्हीं व्यक्तियों के नाम दिए हैं।

मंटो ने 'मंत्र', 'शाहदोले का चूहा' इन कहानियों में समाज में निहित अंधविश्वास तथा धोखाधडी का चित्रण किया है।

मंटो प्रकृति के हिमायती थे। फितरत के खिलाफ जानेवालों का उन्होंने विरोध किया। प्रकृति तथा स्वभावगत आवश्यकताओं की पूर्ती के वे समर्थक थे जिनसे आनंद की प्राप्ति होती है। उनकी कहानियों में इस विशेषता का चित्रण उन्होंने किया है। 'स्वराज्य के लिए' तथा 'बू' इन कहानियों में प्रकृतिगत या स्वभावगत आवश्यकताओं के अवलंबन के पक्ष को उदूघाटित किया है।

खत्म होते इंसानियत की बहुत बड़ी समस्या का चित्रण मंटो ने किया है। 'गुरमुखसिंह की वसीयत' के संतोखसिंह द्वारा मंटो ने इसका चित्रण किया है।

मंटो पर अश्लीलता के कारण पाँच मुकदमे चलाए गए। जिन कहानियों पर मुकदमे चले वो हैं - 'काली सलवार', 'बू', 'ठंडा गोश्त', 'धुआँ', 'ऊपर, नीचे और दरमियान'। 'खोल दो' के लिए 'नुकूश' पर प्रतिबंध लगाया गया। लेकिन आखिरी बार वह इतना थक गए थे कि जब उन्हें जुर्माने की सजा सुनाई गई तो मंटो ने मुकदमा लड़ने की बजाय जुर्माना अदा करना ही बेहतर समझा। उनकी और भी कुछ कहानियों को अश्लील करार दिया गया। मंटो ने इन्हें कतई अश्लील स्वीकार नहीं किया। मुकदमों में दिए अपने तहरीरी बयानों से उन आरोपों का पर्दाफाश किया। उनके अंदर सेक्स की उच्छृंखलता नाममात्र भी नहीं। उनके कई कहानियों की पृष्ठभूमि सेक्स की है, लेकिन सेक्स का चित्रण करते हुए भी उन्होंने उसे अश्लील नहीं होने दिया। बहुत-सी दूसरी अनुभूतियों की तरह, सेक्स को भी मंटो ने एक स्वाभाविक प्रक्रिया मानकर, उसका सहज चित्रण दिया है। चूँकि मंटो का उद्देश्य पाठक को गर्माना भर नहीं है, वरन कहानी के माध्यम से गहरे, दबे-ढँके एहसासों का चित्रण करना है, इसलिए उनकी ऐसी तमाम कहानियों में कहीं भी जुगुप्सा नहीं है। अत: उन्हें अश्लील करार देना अयोग्य है। गहराई से इन कहानियों का अध्ययन करने के बाद स्पष्ट होता है कि उनमें अश्लीलता तनिकमात्र भी नहीं है। अत: मंटो की ये तमाम कहानियाँ अश्लीलता के आरोप से मुक्त हैं।

राजनीतिक समझ हो या आक्रोश, दर्द हो अथवा मानवीय करूणा - जो कुछ भी मंटो ने अपनी कहानियों में व्यक्त किया है, वह सियासत-भरे तरीके से नहीं किया, वरन एक खीज-भरी स्पष्टता से, एक झुँझलाहट भरी बेबाकी से, जो अंधे को सूरदास कहकर अपना मतलब सीधा करने के फिराक में नहीं रहती। वरन, यह सीधी, बेलाग स्पष्टता, मंटो की कहानियों का वह खास गुण है, जिसकी वजह से पाठक मंटो की नीयत में कभी संदेह नहीं कर सकता। मंटो में कहीं भी अस्पष्टता नहीं है, क्योंकि उन्हें पूरा यकीन है कि उन्हें कभी, किसी भी स्थिति में, अपना बयान बदलने की जरूरत नहीं पड़ेगी। यही वजह है कि आज भी मंटो की कहानियाँ पूरे तौर पर प्रासंगिक हैं।

मंटो का साहित्य अपने समय और उस समय के लेखन के लिए, साहित्यिक बहसों और चर्चाओं के लिए ही चुनौतीपूर्ण नहीं था, आज भी और आज के हिंदी, उर्दू लेखन

के लिए, आज की साहित्यिक बहसों और चर्चाओं के लिए भी चुनौतीपूर्ण है - बनावट, कलाबाजी, लफ्फाजी और छद्‌म के खिलाफ, आडम्बर और पाखंड को उधेड़नेवाला। मंटो ने न आधुनिकतावादी साँचा कबूल किया, न प्रगतिवादी। वह जिंदगी की जुराब के धागे को एक सिरे से पकड़कर उधेड़ते रहें और उनके साथ हम उधेड़ते चले गए।

समग्र आलोचना के आधार पर हम निश्चित रूप से कह सकते है कि मंटो की कहानियाँ अनेक समस्याओं से तथा विशेषताओं से चित्रित हैं। उन्होंने सक्षमता के साथ इन्हें अंकित किया है। समाज को मार्गदर्शन करने में उनकी कहानियाँ बहुत बड़ी उपलब्धि है।

उपलब्धियाँ :-

मंटो की कहानियों का अनुशीलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात जो उपलब्धियाँ सामने आती हैं वे इस प्रकार हैं -

1. मंटो ने समाज में छुपी कटु तथा यथार्थ सच्चाईयों को समाज-सम्मुख लाया जो मानवीयता को तलाशती हैं, जिनसे समाज की मानसिकता में परिवर्तन आए और समाज मानवीयता के उन्नत मार्ग पर अग्रसर होता रहे।
2. बँटवारे के कारण बने वातावरण का तल्ख अनुभवित चित्र मंटो ने प्रस्तुत किया है।
3. मंटो के कहानी साहित्य पर रूसी तथा फ्रांसीसी यथार्थवादी साहित्यकारों का प्रभाव है।
4. समाज के निचले वर्ग तथा वेश्या-जीवन का मंटो ने खुलकर चित्रण किया है तथा उनकी समस्याओं को प्रकाश में लाया है। उनके शोचनीय अवस्था पर विचार करने के लिए मंटो की कहानियाँ प्रोत्साहित करती हैं।
5. अपने युगीन परिवेश में हिंदू-मुस्लिम मजहबों के विरोध के कारण पैदा हुई अमानुष घटनाओं का चित्रण करते हुए मंटो ने मजहब की दीवार को खत्म कर इंसानियत की नींव रखनी चाही। उनकी कहानियों का यह प्रमुख उद्‌देश्य था।
6. मंटो ने अपनी कहानियों के माध्यम से गलत व्यवस्था का पर्दाफाश किया और समाज को इससे जागृत किया।
7. आज से पचास साल पहले लिखी हुई मंटो के कहानियों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है, इसका दर्शन कही ना कही होता है। यह इन कहानियों की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

अध्ययन की नई दिशाएँ :-

मंटो के कृतित्व पर निम्न दिशाओं में अनुसंधान किया जा सकता है -

1. मंटो की कहानियों में चित्रित स्त्री-पुरूष संबंध।
2. मंटो की कहानियों के पात्र।
3. मंटो की कहानियों में चित्रित मनोवैज्ञानिकता।
4. मंटो के कहानी-साहित्य में प्रतिबिंबित समाज जीवन।
5. मंटो की कहानियों में उद्घाटित यौन-समस्याएँ।
6. अश्लीलता के आरोप में घिरी मंटो की कहानियाँ।
7. मंटो की कहानियों में चित्रित व्यंग्य।

* * *